POLITICAL SCIENCE Dept.
B.A. Part-2, Paper-4

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. LKV.D. College, Tajpur
Samastipur

राजनीतिक - समाजशास्त्रीय उपागम

तुलनात्मक राजनीति का समाजशास्त्रीय उपागम राजनीतिक परिघटनाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण वैज्ञानिक दृष्टि से किए जाने पर बल देती है। यह राजनीति एवं समाज तथा राजनीतिक प्रक्रिया एवं सामाजिक प्रक्रिया को सामाजिक आधार पर समायोजित करने पर बल देती है।

मैक्स-वेबर, टॉलकॉट पारसन्स, मिचेल्स, दुर्खिम, आर्थर बेंटले आदि विद्वानों ने राजनीतिशास्त्र को समाजशास्त्र एवं नृजातीय सिद्धांतों से सम्बद्ध बनाया है। इनकी मान्यता है कि राजनीतिक पद्धति सामाजिक पद्धति का एक भाग है। विद्वानों ने यह बतलाया है कि आधुनिक राज्यों तथा नृजातीय समाजों में काफी समानता है। इन दोनों के बीच सार्थक तुलना सम्भव है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के विकास में कैटलिन का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस दृष्टिकोण के कतिपय लाभ बताए हैं -

(1) यह समाज के संबंधों और उसकी रचना को सम्पूर्ण रूप से समझने के कार्य को सरल बना देता है।

Scanned with CamScanner

(2) यह राजनीतिक अध्ययन को समाज के एक सामान्य सिद्धांत के साथ जोड़ता है।

(3) राजनीतिशास्त्री को समाज में विकसित होने वाली प्रवृत्तियों के संदर्भ में विश्लेषण करना चाहिए।

(4) इस उपागम के अंतर्गत सिर्फ राज्य एवं सरकार की वास्तविक एवं औपचारिक संस्थानों का ही अध्ययन नहीं होता बल्कि सामाजिक संस्थानों, संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं का भी अध्ययन किया जाता है।

(5) इसमें राजनीति का समाजशास्त्रीय परिवेश में अध्ययन किया जाता है।

इसप्रकार हम उपर्युक्त विवेचन के आधार पर पाते हैं कि राजनीतिक - समाजशास्त्रीय उपागम तुलनात्मक अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। इस उपागम ने तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन करने वाले अध्येताओं को चिन्तन, मनन एवं विवेचन का व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है। तथापि इस उपागम की भी कुछ निश्चित सीमाएँ हैं। तुलनात्मक राजनीति का यथार्थपरक विश्लेषण केवल सामाजिक सन्दर्भों में नहीं किया जा सकता। इसमें इतिहास, आर्थिक, राजनीतिक विकास, सांस्कृतिक कारक आदि की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

Dr. Husna Ara
Asst. Professor

Scanned with CamScanner